*Quest Journals*
*Journal of Hindi, Political Science and Home Science*
*Volume 16 ~ Issue 2 (Mar. – Apr. 2026) pp: 08-12*
*ISSN(Online) : 2347 – 2305*
www.questjournals.org

**Research Paper**

# त्रिलोचन के काव्य में अभिव्यक्त : किसान समस्या

डॉ. स्वप्ना कुमारी
*हिन्दी शिक्षिका*
*+2 एम.एल. एकेडमी लहेरियासराय दरभंगा*

***सारांश :–***

*वर्त्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, सत्ता विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नड़ विमर्श वृद्ध विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श के साथ किसान विमर्श की मांग बढ़ रही है। भारतीय ग्रामीण सामाजिक जीवन का आधार किसानी जीवन वृत्ति रही है। भारतीय किसान पुरातन काल से विभिन्न समस्याओं का सामना और आर्थिक संकटो का शिकार बनता आ रहा है। खेतिहर किसान कर्ज के जाल में फँसते चले जाते हैं। किसानों की नाउम्मीदी के कारण किसानों के आत्महत्याओं के आँकड़ों में बढ़ोत्तरी, सरकार की गलत नितियाँ, खाद-बीज के दामो में बेतहाशा मूल्यवृद्धि आदि समस्यों के रुप में दृष्टिपात करना और उसका समाधान ढूँढ़ना वर्त्तमान समय की आवश्यकता है।*

*भारतीय किसानों की बढ़ती समस्याओं, आत्महत्याओं और संघर्षों का मूल्यांकन किया जाय तो यह समय की मांग है। किसानों की समस्याओं को सामने रखकर हिन्दी साहित्य में गद्य एवं पद्य में अपने स्तर से विश्लेषण करने का प्रयास किया है। त्रिलोचन की किसान दृष्टि अन्य साहित्यकारों से भिन्न है। त्रिलोचन ने ग्रामीण संस्कृति में किसानों की समस्या पूरे यथार्थ के साथ अपनी कविताओं में नये ढंग से प्रस्तुत करते हैं।*

***मुख्य शब्द :-*** *साहित्य, जीवनवृत्ति, आत्महत्या, ग्रामीण संस्कृति।*

**प्रस्तावना :–**

त्रिलोचन शास्त्री की रचनाओं में मुख्यतः किसान के प्रति संवेदना ज्यादा बलबती प्रतीत हो रही है क्योंकि मुंशी प्रेमचंद की तरह उनका जन्म किसान परिवार में हुआ था। प्रेमचंद किसानों की समस्याओं पर अपने रचनाओं के माध्यम से जो बदलाव लाये उसे वे अपने आँखों से नहीं देख पाएँ। उनकी रचनाओं के पात्र संघर्षशील, गरीब किसान, मजदूर, दलित आदि को ही बनाया। त्रिलोचन को प्रेमचंद, निराला, केदारनाथ अग्रवाल तथा नागार्जुन के तरह गरीब, किसान, शोषित दलितों के प्रति सहानुभूति रही।

**अध्ययन का उद्देश्य :–**

भारत में बाजारवादी व्यवस्था का बहुत बड़ा यथार्थ किसान और उसका संघर्षमय जीवन है। आज जिस तरह से शहर रेट, खेतों की जुताई-बुआई, सिचाई, युरिया के दामों में बढ़ोतरी आई है, उचित दामों पर न मिलना, इससे तो यह तय हो जाता है की भारतीय समाज में यदि सबसे अधिक किसी का खस्ताहाल है तो वह भारत के किसान है। सामाजिक, आर्थिक स्तर पर जिन संघर्षों और यातनाओं के बीच किसान अपने जीवन को आगे की ओर लेकर बढ़ रहा है ऐसे में यह साफ हो जाता है कि भविष्य किसानों का नहीं बल्कि बाजार का है जो उसके भीतर गरीबी, विपन्नता के नए बीज बो रहा है। नतीजन उसके जीवन में आत्महत्या ही मानो शेष बचती है। त्रिलोचन का पूरा कांव्य इसी जड़ता से किसानों को मुक्ति की ओर से जाता है तथा किसानों की मुक्ति में ही उनकी कविताओं का मूल उद्देश्य है।

**साहित्यावलोकन :–**

त्रिलोचन के काव्य में मानवीय संवेदना को केंद्र में रखकर भारतीय किसान जीवन के विविध पहलुओं पर समीक्षकों ने अपने अपने विचार अपने शोध आलेखों से समझाने का प्रयास किया है। जिससे भारतीय किसानों की त्रासदी तथा उनका संघर्ष अपने यथार्थ में खुलकर आया है। हिन्दी साहित्य के इतिहस में काव्य-जगत में किसान के ऊपर जितना त्रिलोचन ने लिखा है उतना न तो पहले के किसी कवि ने लिखा न ही उनके समकालीन किसी कवि ने लिखा। किसान-जीवन का जो रुप अन्य लोगों के यहाँ दिखाई नहीं देता यही त्रिलोचन के यहाँ बड़े ही सहज रुप में उपलब्ध दिखाई देता है। उनका ग्रामीण किसान अपने वास्तविक रूप में धूप और ताप को सहन करता हुआ अपनी जीविका हेतु प्रकृति से लड़ता है। (2012) मेंअजित प्रियदर्शी ने अपनी पुस्तक कवि त्रिलोचन में लिखा है त्रिलोचन का मन किसान का मन है, और बादल से बहुत अपनापन होता है किसान का। क्योंकि बादल उनके जीवन में हरियाली लाते हैं। बादल से किसान के मन का उल्लास, उमंग और आकांक्षा जुड़ी है। आसमान में उमड़ते हुए काले बादलों को देखकर कवि का किसान मन प्रफुल्लित, उल्लसित हो जाता है। वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भारतीय किसानों के भविष्य की चिंता को इस आलेख के माध्यम से उजागर करने का एक प्रयास है।

हिन्दी साहित्य में किसान जीवन को केंद्र बनाकर कविता करने वालो कवियों की कमी नहीं है। उनमें से अधिकांश कवि मध्यवर्गीय दृष्टि से किसान-जीवन के यथार्थ को देखते हैं। वह कभी समय की माँग तो कभी बौद्धिक सहानुभूति के कारण किसान-जीवन की कविता लिखते है। ऐसी कविताओं में कहीं कवि तटस्थ दर्शक की तरह होता है, तो कहीं किसानों का वकील। त्रिलोचन इनसे भिन्न एक अलग दृष्टि के कवि है, जो किसान जीवन की दयनीयता से द्रवित होकर उनकी व्यथा-कथा कहते है या किसान जीवन की सरलता, सादगी और पवित्रता का गौरय गान करते हैं। त्रिलोचन की कविताओ में व्यक्त किसान जीवन को निहारते हुए यह कहना काफी नहीं कि यह किसानों के जीवन संघर्ष की कविता है। यह भी देखना जरूरी है कि वे किसान जीवन के यथार्थ को किस दृष्टि से देखते और चित्रित करते हैं। कुछ कवि किसान को एक धारणा या विचार मात्र मानते है और कविता में उस पर बहस करते हैं। त्रिलोचन किसानों को जीते-जागते मानव समुदाय के रुप में देखते हैं। किसानों की आर्थिक स्थिति के अनुसार उसके अनेक स्तर है. कई तरह के भेद हैं। त्रिलोचन की कविता में गरीबी, शोषण और उत्पीडन के शिकार किसान हैं। उनकी कविता में सबसे अधिक खेतिहर मजदूरों में स्त्रीयों की जीवन दशा पर उनकी दृष्टि अधिक गई है। नगई, महारा, मोरई, केवट, मंगल, निरहू, भिखरिया, अवतरिया, चंपा, सोना और सकूनी जैसे पात्र हैं।

हिन्दी कविता जिस समय आम जन-जीवन से दूर घोर व्यक्तिवादी और प्रचारवादी स्वरों से ग्रस्त थी, त्रिलोचन ने ठीक उसी समय धरती (1645) काव्य-संग्रह के माध्यम से हिन्दी काव्य जगत में प्रवेश किया। इस संग्रह की कविताओं में अधिसंख्यक भारतीय किसानों के जीवन संघर्षो का नई चेतना के साथ कवि ने प्रस्तुत किया है। वह हिन्दी कविता के एक नवीन चरण व उसकी नवगति तथा नव चेतना का परिचायक है। उनकी कवितओं में मानव मुक्ति का सधा हुआ राग त्रिलोचन की कविताओं में मिलता है। वे किसान जीवन के वास्तविक सुख-दुख, आशा-निराशा और संघर्षों को यथार्थता से अभिव्यक्त किया है। पूँजीवादी व्यवस्था और सरकार की गलत नीतियों के कारण किसानों को अपने श्रम का कमी भी वाजिब दाम नहीं मिलता। फलतः भूख, गरीबी और बीमारी के कारण उनका जीवन बत से बतर होता चला गया। त्रिलोचन इन्हीं विकृतियों के निराकरण के लिए किसानों की संघर्ष चेतना को युगीन चेतना के स्वरों से अनुप्राणित करते हैं। खेतिहरों की दयनीय दशा को देखकर त्रिलोचन उनके संघर्ष भाव को नई धारा देते हुए लिखते हैं-

"बिगुल बजाओ और बढ़ चलो।
यह सम्मुख मैदान पड़ा है
मानवता के मुक्ति-दूत तुम।
कौन तुम्हारे साथ अड़ा है।

त्रिलोचन किसानों के प्रति केवल बौद्धिक सहानुभूति व्यक्त नहीं करते, प्रत्युत किसानों के जीवन-संघर्षों की कविता लिखते हैं। उनमें मध्यवर्गीय तटस्थता और भावुकता के स्थान पर एक सजग किसान दृष्टि सक्रिय है, जो उन्होंने जनपदीय परिवेश में जीवन जीते, देखते-सुनते और समझते हुए अर्जित की है। त्रिलोचन किसान जीवन को उसकी समग्रता में देखने के पक्षधर है और इसके लिए श्रमजीवी (खेतिहर)

जनता के हास-परिहास और दुःख-दैन्यों को पूर्ण प्रतिबद्धता से अंकित करते हैं। इनकी कविताओं का खेतिहर किसान, अभावों में हारता नहीं, अपितु श्रम और संघर्ष के बलबूते नये समाज की रचना करते है।

अगर न हो हरियाली
कहीं दिखा सकता हूं? फिर आँखों पर मेरी
चश्मा हरा नहीं है। यह नवीन ऐयारी
मुझे पसंद नहीं है। जो इसकी तैयारी
करते हों वे करें। अगर कोठरी अँधेरी
है तो उसे अँधेरी। समझने-कहने का
मुझको है अधिकार।

ये मानते हैं कि अगर किसान के जीवन में संघर्ष और दुख है तो उस वास्तविकता को झूठलाना गलत है। लेकिन त्रिलोचन आशावादी कवि घोर निराशा की लौ में आशा की लौ बुझा नहीं देते हैं कि दुख के तम में जीवन-ज्योति जला करती हैं। वे किसान जीवन की करुण-कहानी नहीं कहते, उसके स्वाभिमान की रक्षा को महत्व देते हैं। उनका किसान अभाव में जीता है, अभाव से घबराता नहीं है। उनकी कविता में किसान जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

त्रिलोचन की दृष्टि एक सजग किसान की दृष्टि है। जो उस जीवन को जीते, देखते-सुनते और समझते हुए कवि को मिली है. इसीलिए उनमें किसान जीवन से आत्मीयता और तादाम्य है, मानवीय संबंधों और भाव के बोध में भी उनकी वही दृष्टि सक्रिय रहती है। उनकी कविता में किसान जीवन के विविध पक्षों का चित्र है। वे चित्र अलग-अलग है. फिर भी उनमें संबंध है और उस संबंध से किसान जीवन की लय उभरती है। मध्यवर्गीय मानसिकता के कवियों की कविता में किसान बहुत कुछ करता है, लेकिन यह खेती करता नहीं दिखाई देता है। त्रिलोबन सबसे पहले किसान को किसान के रूप में जीवन के लिए प्रकृति से संघर्ष करते हैं।

है धूप कठिन सिर ऊपर
थम गई हया है जैसे
दोनों दूबों के ऊपर
रख पर खींचते पानी

तेज धूप तथा धरती की गर्मी, पसीने से लथपथ दंपति को कभी उजले बादल आकर उनको पलभर के लिए चीन दे जाते हैं तो कभी कभी पूर्वी हवा उनके पसीनों को हर लेती है। अविराम कर्मरत रहते हुए तब तक वे सांसों को संयत रखकर कुछ बातचीत भी करते हैं और पल दो पल को नयन भी मिलाते हैं। लेकिन यह नयन मिलना रोमांटिक नहीं बल्कि बल को थहाने के लिए होता है कि क्या और अधिक समय तक बेडी चल सकती है। वे अपनी थकान मिटाने और नवकर्म शक्ति प्राप्त करने के लिए निकट के पेड़ की छाया में थोड़ा सुस्ताते भी हैं। इस प्रकार पूरी कविता खेत सिचाई के कठिन श्रम का समग्र चित्र सामने ला देती है। ऐसा हृदयग्राही चित्र तथा किसान जीवन से आत्मीयता और भोगे हुए जीवन से ही प्राप्त किया जा सकता है।

"ये हरे खेत–/है याद तुम्हें?
मैंने जोता तुमने बोया/धीरे-धीरे अंकुर आए
फिर और बढ़े/हमने तुमने मिलकर सींचा
फैली मनमोहन हरियाली/

इन पंक्तियों में त्रिलोचन ने किसान दम्पत्ति की फसल के प्रति जो चिंता व्यक्त की है यह कोरी कल्पना से मिन्न किसान जीवन की सहज चिंता के साथ व्यक्त हुई है। त्रिलोचन मूलतः किसान परिवेश से आते हैं इसीलिए उनकी अधिकांश कविताओं में किसान जीवन का हर्ष-विषाद अधिक गहराई के साथ उभरकर आया है।

जैसे प्रकृति के बिना किसान का जीवन अपूरा होता है वैसे ही प्रकृति की रक्षा करने वाली किसान-जीवन की कविता भी प्रकृति चित्रण के बिना अधूरी होगी। यह बात किसान-जीवन की समग्रता का कवि जानता है। प्रकृति किसान-जीवन का अंग है। उससे किसान

का संबंध मनवाने की बात नहीं है, अस्तित्प की अनिवार्यता है। त्रिलोचन का किसान मन प्रकृति में खूब रमता है। उनके यहाँ प्रकृति किसान-जीवन के अंग के रूप में है और उससे स्वतंत्र भी, उसका आकर्षक सौदर्य है और विस्मयकारी रुप भी, सावन की बरसात का संगीत है और भादो का प्रचण्ड मेघ गर्जन भी, प्रकृति से सहज आत्मीयता है और कठिन संघर्ष भी।

त्रिलोचन की कवि दृष्टी प्रकृति में अधिक रमी है। फलतः प्रकृति के नाना रुप कवि के लिए जैसे संध्या, प्रातरु सर्दी, वर्षा, बसंत और शरद ऋतुओं के चित्र खेत-खलिहानों से जुड़कर किसान जीवन का मुख्य सहचर बन कर आया है। यह बहुत बड़ा सच है की बादल और वर्षा से किसानों का एक आत्मीय लगाय होता है कारण उससे किसानों को न सिर्फ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है बल्कि उसी में उसका जीवन बसता है। कालिदास ने भी मेघदूतम् में मेघ की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते हैं। ठीक उन्ही के अनुरूप त्रिलोचन का किसान जीवन बादलों की ओट में छिपा है। इस लिए उनके मन में खासकर वर्षा ऋतु में बादलों को न पाकर उनके मन में भय समा जाता है :–

हँसता है अकाल तारों में दांत निकाले
मन किसान का मेरा, चौन नहीं पाता है
ताक रहे आकाश, नहीं जलधर की छाया
कहीं, दिखाई देती है, भय तन घर आया।

बादलों से किसान का बहुत अपनापन होता है क्योंकि बादल किसान के जीवन में हरियाली लाता है। बादल से किसान के मन की उमंग और आकांक्षा जुड़ी है। आसमान में उड़ते काले बादलों को देख कर मन प्रफुल्लित हो जाता है और यह कह उठता है-

उठ किसानों, उठ किसान।
बादल घिर आये हैं
तेरे हरे भरे सावन के
साथी ये आये

किसान का मन अषाढ़ के बादलों का साक्षात्कर कर प्रफुल्लित हो उठता है कारण वह बादल को फसलों का जीवन दाता समझता है, वह महसूस करता है कि यह वही बादल है जो फसलों में दानों का रूप दे कर एक दिन जरुर मुस्कुरायेगा। तभी तो-

हरा खेत जब लाहराएंगे/
हरी पताका फहराएँगे/
छिपा हुआ बादल तब उसमे /
रुप बदल कर मुस्काएंगे/

प्रगतिशील कवियों को किसान जीवन से अधिक लगाव है। ये जनपदों की ओर पर्यटन के भाव से उन्मुख नहीं होते अपितु वै उनमें जीवन संघषों से लड़ने की शक्ति पैदा करते हैं।

जीवित मानव महिमा तुम से/
तुम कौन जीवन के धर्ता
तुम मानव जीवन के कर्ता/

प्रगतिशील कविता सामाजिक प्रतिबद्धता की कविता है। उसमे कोरी बौद्धिक सहानुभूति न होकर दुख-दर्द भरे कृषक समाज के संघर्षपूर्ण जीवन के गहरे अवसादों की पीड़ा है और इस पीड़ा के मूल में धरती का न्यायोचित विभाजन न होना है। त्रिलोचन ने धरती संग्रह के माध्यम से अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति आवाज उठाई है।

**निष्कर्ष-** त्रिलोचन की में कविताओं किसान जीवन के विविध पक्षो के मूल्यांकन के आधार पर कहा जा सकता है कि उनकी दृष्टि किसान-जीवन को समग्रता में देखती है। त्रिलोचन अपने जनपदों के प्रति जठमोह का शिकार नहीं होते, अपितु किसानों पर सामंतों द्वारा थोपी गई जटिल कुव्यवस्थाओं का पर्दाफाश व तीव्र विरोध करते हैं। वे किसानों को उनकी अपनी शक्ति से परिचित करवाकर उसकी संघर्ष चेतना

को दीप्त करने की प्रेरणा देते हैं। श्रम से मार खाए किसानों की मानसिकता को उनके मूल अधिकारों के प्रति जागृत करते हैं जिससे वे स्वस्थ जीवन जी सकें। त्रिलोचन इसी सजग किसान-दृष्टि से प्रकृति, समाज और विश्व को देखते हैं।

**सन्दर्भ–**


1. त्रिलोचन धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण-1977
2. पाण्डेय मैनेजर हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2013
3. त्रिलोचन दिगन्त जगत संखधर, वाराणसी, संस्करण - 1957
4. त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण-1977
5. पाण्डेय मैनेजर, हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान
6. त्रिलोचन् अनकहनी भी कुछ कहनी है, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली संस्करण-1985
7. त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण-1977
8. त्रिलोचन, धरती नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण-1977
9. पांडे डॉ. हरिनिवार, प्रगतिशील कायधारा और त्रिलोचन सहित्य भंडार इलाहाबाद-2012 से 111
10. प्रियदर्शी अजित कवि विलोचन विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2000 से 47


☻☻☻